PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Nai Dunia, Delhi
Wed, 09 Aug 2017, Page 8
Width: 44.62 cms, Height: 46.23 cms, a3, Ref: 31.2017-08-09.82

भारत छोड़ो आंदोलन के 75 साल **ऐतिहासिक घटनाओं को याद करने का उपयुक्त तरीका यह है कि उनके नए समकालीन मायने तलाशे जाएं।**

नए दौर में नया 'भारत छोड़ो' संकल्प

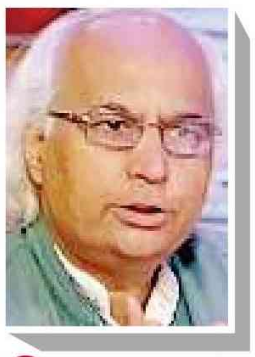

सुधींद्र कुलकर्णी
sudheenkulkarni@gmail.com

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने पिछले 'मन की बात' संबोधन में जिस तरह देशवासियों से 'भारत छोड़ो आंदोलन' की भावना को पुनर्जीवित करने और देश से गंदगी, गरीबी, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, जातिवाद व सांप्रदायिकता जैसी बुराइयों को खदेड़ने का आह्वान किया, वह वाकई स्वागतयोग्य है। पर क्या उनकी पार्टी व संघ परिवार उनकी इस अपील के साथ पूरी तरह चलने को तैयार है?

समय गुजरने के साथ अतीत में घटित बड़ी-बड़ी घटनाएं भी अपना महत्व खोने लगती हैं। जो घटनाएं कभी बेहद अहम मानी जाती थीं, उन्हें आज के नजरिए से गौण समझा जाने लगता है। जिन घटनाओं ने कभी व्यापक पैमाने पर लोगों को आकर्षित किया था, वो अब ज्यादातर इतिहासकारों और स्कॉलर्स को ही लुभाती लगती हैं। भारत एक प्राचीन देश है, लिहाजा इसका इतिहास भी काफी समृद्ध है। हम एक ऐसा देश भी हैं, जो तेजी से आधुनिक बन रहा है। जब देश आधुनिक बनता है, तो वह अपनी पुरानी खूबियों को भूलने लगता है और इनके प्रति उसकी यादें भी धुंधलाने लगती हैं। पर कोई भी देश ऐसी अहम घटनाओं को भूलना गवारा नहीं कर सकता, जो उसके इतिहास में मील का पत्थर साबित हुई हों। अपने इतिहास को भुलाना अपनी पहचान को भुलाना, अपने अतीत से कट जाना और साथ ही साथ अपने भविष्य के प्रति बेपरवाह होने जैसा है।

आधुनिक भारत भी आज ऐसी भूलने व याद करने की कशमकश से जूझ रहा है। जो घटनाएं वाकई याद करने लायक हैं, उन्हें याद करने का एक उपयुक्त तरीका यह है कि अतीत के अहम पड़ावों में नए समकालीन मायने तलाशे जाएं। जब हम अतीत की अहम घटनाओं के समकालीन सबक की ओर ध्यान नहीं दे पाते, तो या तो हम उन्हें भूल जाते हैं या फिर महज रस्मी तौर पर उनकी सालगिरह आदि मनाते हैं।

क्या ऐसा ही कुछ भारत छोड़ो आंदोलन के साथ भी है, जिसकी देश आज 75वीं वर्षगांठ मना रहा है? वर्ष 1942 में महात्मा गांधी के आह्वान पर बंबई से शुरू हुआ यह आंदोलन भारत के स्वाधीनता संग्राम के तहत आखिरी महाआंदोलन था। इसके तहत देशभर में लाखों देशभक्तों ने अपनी गिरफ्तारियां दी थीं। तब गांधीजी के 'करो या मरो' के नारे ने देशवासियों को आंदोलित कर दिया था और वे किसी भी कीमत पर विदेशी ताकत से देश को आजाद कराने के इस महायज्ञ में कूद पड़े। इसके चलते पांच साल में ही अंग्रेज भारत छोड़ने को विवश हो गए थे।

हमारे देश के स्वाधीनता संग्राम में भारत छोड़ो आंदोलन की खास अहमियत है। जैसे 1857 को पहले स्वाधीनता समर की राष्ट्रव्यापी शुरुआत के रूप में याद किया जाता है, वैसे ही 1942 इसका अंतिम और विजयी युद्ध आह्वान था। पर अफसोस कि भारत सरकार व भारतीय समाज 9 अगस्त 1942 की 75वीं वर्षगांठ के इस ऐतिहासिक क्षण को भी रस्मी स्मृति आयोजनों से परे राष्ट्रव्यापी परिचर्चा व कीर्तिगान का उचित अवसर बनाते नजर नहीं आते। यह निराशाजनक है क्योंकि इस साल देश अपनी आजादी की 70वीं वर्षगांठ भी मनाने जा रहा है।

आखिर क्यों भारत छोड़ो आंदोलन के

इस 'अमृत महोत्सव' को पर्याप्त तवज्जो नहीं मिल पा रही है? इसके कुछ फौरी राजनीतिक कारण हैं। पहला, सत्ताधारी भाजपा भले ही इसे खुलकर न कहे, लेकिन वह भारत छोड़ो आंदोलन को कांग्रेस की विरासत की तरह देखती है। आखिर, भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव 8 अगस्त 1942 को बंबई के गोवलिया टैंक मैदान (जिसे बाद में अगस्त क्रांति मैदान के नाम से जाना गया) में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में ही पारित किया गया था। अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार किए गए तमाम नेता व कार्यकर्ता कांग्रेस के सदस्य थे। कोई भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से नहीं था। तब तक भारतीय जनसंघ भी अस्तित्व में नहीं आया था (जो 1951 में बना) और भारतीय जनता पार्टी की स्थापना तो और भी बाद (1980) में हुई। लिहाजा संघ परिवार का इससे सीधा कोई भावनात्मक जुड़ाव नहीं है।

दूसरा, भारत छोड़ो आंदोलन के (या कहें कि लोकमान्य तिलक के निधन के बाद भारतीय स्वाधीनता संग्राम के भी) महानायक महात्मा गांधी थे। किंतु गांधीजी संघ परिवार के महानायक नहीं हैं। संघ परिवार के कुछ लोगों के लिए तो वे खलनायक हैं। इसके तो नायक हैं वीर सावरकर (गांधीजी के वैचारिक व राजनीतिक विरोधी), डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार और गुरुजी गोलवलकर।

इस लिहाज से यह वाकई स्वागतयोग्य है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अक्सर महात्मा गांधी के नाम का उल्लेख करते हैं। उन्होंने गांधीजी को स्वच्छ भारत अभियान का आयकॉन बनाया। अपने पिछले 'मन की बात' संबोधन में मोदीजी ने देशवासियों से भारत छोड़ो आंदोलन की भावना को पुनर्जीवित करने की अपील करते हुए एक बार फिर राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने देशवासियों से गंदगी, गरीबी, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, जातिवाद और सांप्रदायिकता के खिलाफ भारत छोड़ो आंदोलन शुरू करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा - 'जिस तरह भारतीय स्वाधीनता संग्राम के आखिरी पांच वर्ष (1942-1947) निर्णायक रहे, उसी तरह मैं 2017 से 2022 के पांच वर्ष के कालखंड को एक और संकल्प-सिद्धि के तौर पर देखता हूं कि हम भारत छोड़ो आंदोलन की भावना के अनुरूप हमारे देश को ऐसी समस्याओं को मुक्त कर एक न्यू इंडिया बनाएं।'

प्रधानमंत्री की यह अपील वाकई स्वागतयोग्य है। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन को समकालीन मायने व महत्ता प्रदान करते हुए बहुत अच्छा काम किया। लेकिन समस्या यह है कि न तो उनका पार्टी संगठन और न ही संघ परिवार भारत छोड़ो आंदोलन की भावना को पुनर्जीवित करने की उनकी अपील के साथ पूरी तरह चलने को तैयार लगता है। आज भाजपा (या कहें कि संघ) का सांप्रदायिक एकता, एकजुटता व सहभागिता पर ज्यादा जोर नहीं है। गांधीजी हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल हिमायती थे, जिस पर उन्होंने अंग्रेजो भारत छोड़ो आंदोलन का बिगुल फूंकते वक्त भी जोर दिया था। लेकिन भाजपा और संघ परिवार का फोकस तो सिर्फ हिंदू वोट बैंक को सुदृढ़ करने और 2019 के संसदीय चुनाव में कही ज्यादा बड़ी जीत हासिल करने पर है।

गांधीजी व संघ परिवार के दृष्टिकोण में एक और अहम फर्क है। भले ही गांधीजी कांग्रेस से जुड़े थे, लेकिन वे हमेशा वामपंथियों से लेकर आरएसएस और मुस्लिम लीग से लेकर आंबेडकरवादियों जैसी गैर-कांग्रेसी शक्तियों तक भी पहुंचने का प्रयास करते थे। उन्हें इनकी अच्छी बातों मानने और इनके साथ सहयोगी संबंध बनाने में कभी हिचक नहीं हुई। यह भारत छोड़ो आंदोलन के पहले, उस दौरान और उसके बाद की उनके ब्रांड की राजनीति (हालांकि वे कदाचित ही ठेठ राजनेता थे) में साफ देखा जा सकता है। अफसोस कि समन्वयकारी राजनीति और सर्व-समावेशी राष्ट्र निर्माण के इस प्रबुद्ध गांधीवादी दृष्टिकोण का आज भाजपा और संघ परिवार द्वारा कदाचित ही अनुसरण किया जा रहा है।

लिहाजा यदि प्रधानमंत्री मोदी वाकई यह मानते हैं कि देशवासियों को वर्ष 2022 तक बेहतर न्यू इंडिया के निर्माण के लिए भारत छोड़ो आंदोलन की भावना को पुनर्जीवित करना चाहिए, तो उन्हें पहले अपनी पार्टी व (संघ) परिवार के मन में यह बात बिठानी होगी।

(लेखक पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के पीएमओ में सहयोगी रहे हैं)